श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - १

प्रश्न - पत्र

जून-२०२४
गुणांक - १००

सूचनाः १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरूरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरूरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. "सुणेह भो । भव्वा !" इस पद के द्वारा इस ग्रंथ के अभ्यास के लिये .... अधिकारी है।
२. .... पूर्व में से श्रुतसार का संकलन करने वाले प्रथम जैनाचार्य थे।
३. वन के .... से जल चुके वृक्षों की तरह फिर से पुनः लक्ष्मी को प्राप्त हुए है।
४. निर्दोष गोचरी मिलने से साधु का .... शुद्ध बने उसी तरह उसकी आराधना में भी वेग आता है।
५. .... से गिरते हुए भी जीव को सम्यकत्व का अंश होता है।
६. तोप का गोला एकदम नजदीक से गुजरने से मुश्किल से बचे, जीवन की .... सोचते हुए वापस लौटे।
७. मुनि किसी भी गृहस्थ को तकलीफ न हो ऐसे आहार लेकर .... करता है।
८. बहुत .... के बाद उसने गांव और राजमहल का त्याग किया।
९. कार्य की (ग्रंथ की) सफलता में कोई भी विघ्न न आये इसके लिये .... करने में आया है।
१०. इसके एक बिंदु में कण में असंख्य एकेन्द्रिय................ के जीव है।
११. संयम लेकर शय्यंभवमुनि ने तप, जप की आराधना के साथ .... की धून रमायी।
१२. श्रावक के द्वार .... कहलाते है।
१३. अस्पष्ट चैतन्यवाले असंज्ञी जीवो को जो मिथ्यात्व मोहनीय का उदय होता है वह .... मिथ्यात्व है।
१४. संसार की भयानकता और .... समझाते है।
१५. भव्य जीवों के लिये .... मिथ्यात्व की स्थिति है।
१६. वैराग्य की बातें कानो से टकराते ही प्रभव को झटका लगा, ... में से मानो उसकी आत्मा जाग गयी।
१७. जैसे जैसे ज्यादा से ज्यादा गुणों की प्राप्ति होती है, वैसे वैसे जीव धर्म .... के उंचे उंचे लक्ष्य को प्राप्त करता है।
१८. चौदह गुणस्थानक की श्रेणि से जीव .... अथवा सिद्धिपद को प्राप्त करते है।
१९. कितनी .... थी, अपने केवली भगवंतो के पास एवं पूर्वाचार्यो के पास ?
२०. इसकी ज्योति............... है, पर इस ज्योति में से जमता काजल काला है, किसलिए ?

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. मोहग्रस्त संसारी जीव किन निमित्तो से प्रसन्न होते है ?
२. जिनेश्वर भगवंतो ने किसका नाश कर गुणस्थानको का आरोहण किया है ?
३. पंच प्रतिक्रमण के अभ्यास के बाद क्या पढना जरूरी है ?
४. क्या टिकाये रखने के लिये अपवाद का मार्ग बताया गया है ?
५. कौनसे मंत्र के प्रभाव से उग्र सर्प एक कीडे जैसा लगता है ?
६. सभी धर्म सच्चे है, ऐसी समझ अथवा बुद्धि वह क्या है ?
७. महावीर के शासन के प्रथम श्रुतकेवली कौन थे ?
८. चित्त चलित होने पर क्या मुश्किल बन जाता है ?
९. अर्धपुद्गल परावर्त संसार बाकी रहा हो ऐसे जीवों को ही क्या होता है ?
१०. किसके प्रभाव से यज्ञ की सारी क्रियाये निर्विघ्न चल रही थी ?
११. पदार्थो का बोध कराकर किसकी अभिलाषा जागृत करता है ?
१२. उपशम सम्यक्त्व की प्राप्ति कैसे होती है ?
१३. सारे सूत्रो का सार मुझमें है ?
१४. क्या घटने से साधु-साध्वीजी भगवंत एकासणे की परम्परा नहीं निभा पा रहे है ?
१५. प्रभव चोर कौनसी विद्या से गाढ निद्रा फैलाता था ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. मोगाहणा २) उल्लूरिय ३) खुभिअ ४) तस्सुत्त ५) अदेवा ६) तिरिय ७) वुच्छं ८) ठिइ ९) परिच्छुढ १०) संसइ
११. विहवसारा १२) श्राद्धत्व १३) पत्ता १४) समयादावलि १५) निव्वाविअ १६) दड्ढा १७) मयोगाख्यं १८) वुन्न
१९. वओगो २०) स्त्येव

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) श्रीशय्यंभवसूरी	१) अल्प आयुष्य	६) मनकमुनि	६) अव्यक्त मिथ्यात्व
२) आहार	२) दस दंडक	७) उपशम सम्यक्त्व	७) अपकाय
३) आत्मा	३) अनिवृतिकरण	८) भव्य जीव	८) तृतीय पट्टधर
४) धुंध	४) मुकुटमणि	९) देवता	९) नीरंजन
५) अज्ञान तुल्य	५) सास्वादन गुणस्थान	१०) भवनपति	१०) ईर्यासमिती

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. शय्यंभवमुनि को आचार्य पद वि.सं. पूर्व के कौनसे वर्ष में दिया गया ?
२. सास्वादन गुणस्थान पर रहे जीव की सत्ता में कितनी प्रकृति होती है ?
३. श्रीगजसारमुनि ने प्रथम गाथा में जिनेश्वरो की स्तवना करके कितनी बाते स्पष्ट की है ?
४. साधु को कितने कारणो से (अपकाय विराधना की दृष्टि से) गोचरी के लिये नहीं निकलना चाहिये ?
५. वीर शासन के पांचवे गणधर कौनसे वर्ष में हुए ?
६. गति की अपेक्षा से तिर्यंच के कितने दंडक होते है ?
७. ठाणांगसूत्र के वृति में कितने प्रकार के मिथ्यात्व कहे गये है ?
८. कौनसे आरे के अंत तक "श्रीदशवैकालिक सूत्र" रहेगा ?
९. श्रीवीर प्रभु के निर्वाण के कितने वर्ष बाद जंबूस्वामी मोक्ष जाते है ?
१०. श्रीशय्यंभवसूरि का दीक्षा पर्याय कुल कितने वर्ष का था ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. श्री दंडक प्रकरण प्रत्येक मुमुक्षु के समय जीवन का आधार स्तंभ है ।
२. आहार की असर आहार लेने वाले साधु के मन, साधना व आराधना पर पडती है ।
३. क्या मनुष्य बनना भी दंड ही है ?
४. सुधर्मास्वामी की मीठी मधुर देशना सुन प्रभवकुमार वैराग्य पामे ?
५. अनादिकाल से एकन्द्रिय जीव को अव्यक्त मिथ्यात्व होता है ।
६. आठो कन्याये अनेक युक्तियो एवं दृष्टांतो से जंबूकुमार के पास संसार के दुःखो का वर्णन करती है ।
७. ग्रंथकार महर्षि ग्रंथ के अंत में मांगलिक कर रहे है ।
८. सत्य तत्वरुप एक जैन धर्म ही है ।
९. परमात्मा का मार्ग अनेकांत का नहीं एकांत का है ।
१०. जैन साधु मरणांत कष्ट आये तो भी असत्य वचन नहीं बोलते है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. उनके सानिध्य में रहकर जैनधर्म और साधुजीवन की समझ प्राप्तकर जैन दीक्षा अंगीकार कर मनक मुनि बने ।
२. जन्माध व्यक्ति वस्तु के रम्य, अरम्य, अच्छे, खराब स्वरुप को जानते नहीं ।
३. अपनी क्षुधा को मिटाने के लिये किसी भी जीव को तकलीफ नहीं देने की उत्कृष्ट भावना यही इसके पीछे का अनोखा रहस्य है ।
४. सभी को सुंदर धर्मोपदेश देकर उनकी संयम भावना में वृद्धि की ।
५. आज के समय की अपेक्षा से हमारा आयुष्य इतना अल्प है की उतने समय में श्रुत सागर का बिंदुमात्र भी ज्ञान पाना कठिन है ।
६. सभी वृक्षों से गहन और जलती मुग्ध मृगलीओं के भयंकर शब्दो से भयभीत करने वाले वन में अग्नि उन्हें भयभीत नहीं करता ।
७. ऐसा करने से साधु बहुत दोषो से बच जाता है ।
८. हम भी हमारे स्वामी के साथ संयम पथ पर विचरण करेंगे ।
९. इस पद से दंडक पद के आधार से जिनेश्वर परमात्मा के आगम संक्षिप्त में समझाना है, ऐसा विषय बताया है ।
१०. अब उसका केवल अर्ध पुद्गलपरावर्तन काल बाकी रहा ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. श्रीदशवैकालिक सूत्र का इतना महत्व क्यों है ? २) जंबूकुमार सबको कैसे प्रतिबोधित करते है ?
३. गोचरी के बारे में क्या सावधानियाँ बरतने के निर्देश है ? ४) कौनसे मंत्र के प्रभाव से क्या क्या होता है ?
५. दंडक यानि क्या ?

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com